थारू जन - जातियों का भौगोलिक विश्लेषण

(वहनीय (टिकाऊ) विकास के सामाजिक संदर्भ में)

डॉ० सर्वेश्वर नाथ सिंह एसो० प्रोफेसर

भूगोल, एम० एल० के० (पी०जी०) कालेज

बलरामपुर (उ०प्र०)

कृषि व्यवस्था पर आधारित समाज औद्योगिक समाज की अपेक्षा अधिक पारिस्थितिकी संगत होता है क्योंकि इसमें उत्पादन मुख्यतया सौर ऊर्जा संचालित होता है जिसमें मानव कृत ऊर्जा अल्पांश होता है। मानव श्रम के अतिरिक्त सिंचाई, उर्वरक, खाद आदि से उत्पादकता वृद्धि का प्रयास किया जाता है। कृषि व्यवस्था में श्रमिक एवं भूमि का प्रत्यक्ष संयोग होता है, संकेन्द्रण की अपेक्षा विखराव होने से जैव-भू-रासायनिक चक्रों की क्रियाशीलता एवं अपशिष्ट आत्मसात करने की क्षतमा न्यूनाधिक बनी रहती है।

वनों पर आजीविका हेतु आश्रित समाज जो वनों के लघु उत्पादों पर आश्रित रहता है अपेक्षाकृत अधिक पर्यावरणानुकूलित रहता है।

अध्ययन क्षेत्र-

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश का उत्तरी भाग है जिसकी सीमाएं नेपाल की सीमा बनाती हैं। पूर्व में इसकी सीमाएं तिब्बती भूभाग की सीमा निर्धारित करती थी किंतु अब उत्तरांचल की सीमा को स्पर्श करती है।

उ0 प्र0 23°.52’ उत्तरी अक्षांश से लेकर 30°.25’ उत्तरी अक्षांश तक तथा 77°.3’ पूर्वी देशांतर से लेकर 84°.39’ पूर्वी देशांतर तक कुल 2,40,928 वर्ग किमी0 क्षेत्र में फैला हुआ है। यह राज्य संपूर्ण देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग 7.32% है तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से देश में इसका पांचवा स्थान है।

थारू उत्तर प्रदेश तथा निकटवर्ती बिहार के तराई क्षेत्र में बसे हैं । इनकी सर्वाधिक संख्या कुमांयु तराई, बोकसर तराई (कालका घाटी से कोटद्वार के मध्य) तथा नेपाल की सीमा और गोरखपुर के बीच स्थित पूर्वी उत्तर प्रदेश की तराई में मिलती है। यह क्षेत्र शिवालिक श्रेणियों से संलग्न 'भाबर' तथा वास्तविक मैदानी क्षेत्र के मध्य एक आर्द्र पेटी के रूप में मिलता है, जहां हिमाचल प्रदेश से निकलने वाली नदियों का प्रवाह मन्द पड़ जाता है । वर्षा भी दक्षिणस्थ मैदानी भागों की अपेक्षा अधिक होती है। साधारणतया वर्षा की मात्रा पश्चिमी तराई में 100 सेमी० से पूर्वी भाग में 150 सेमी0 तक होती है । अतएव इस क्षेत्र में जलाधिक्य सर्वप्रधान भौगोलिक तत्व है । इसके कारण यहां नदियों एवं अन्य जलाशयों की बहुलता है । फलस्वरूप यह क्षेत्र सघन वनाच्छादित है, जिसमें शाल के वृक्षों की बहुलता है । मानव निवास के दृष्टिकोण से यह प्रतिकूल सीमान्त क्षेत्र है । यही कारण है कि थारू जैसे पराजित और अपने मूल निवास स्थान से पलायित लोगों का शरण क्षेत्र बना ।

नोल्स के अनुसार 'थारू' शब्द की उत्पत्ति पहाड़ी शब्द 'थरना' से है जिसका अर्थ विचरण करना होता है । परन्तु 'थारू' अब घुमक्कड़ अवस्था में नहीं मिलते । सम्भव है पहले ये एक स्थान से दूसरे स्थान पर अनुकूल वातावरण की खोज में घुमा करते रहे हों । कुछ लोग इनमें शराब पीने की प्रवृत्ति के कारण इनका नामकरण स्थानीय बोलियों में मदिरा के पर्याय थारू अथवा दारू से जोड़ते हैं । अधिक विश्वसनीय व्याख्या इनको 'थार' रेगिस्तान से जोड़ती है जो इनकी आदि भूमि मानी जाती है । प्रश्न उठता है कि ये फिर 'थार' से सर्वथा विपरीत वातावरण युक्त तराई क्षेत्र में क्यों और कैसे आ गये? इसका सूत्र इनमें प्रचलित लोक-कथाओं तथा पारिवारिक-सामाजिक प्रवृत्तियों में मिलता है । इनकी लोक-कथाओं के अनुसार ये लोग राजस्थान की रियासतों में सेवक दास अथवा सूत्र सैनिक थे। राजस्थान में विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण से जब राजपूत राजाओं की हार हुई और अधिकतर राजपूत मारे गये तो रानियां इन सेवकों तथा सैनिकों के साथ अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए भाग निकलीं । विदेशी आक्रांताओं के चंगुल में न पड़ने के लिये ये दुर्गम तराई

के जंगलों में आ बसे । क्रमश: इन रानियों की अविवाहित लड़कियां इनसे ब्याह दी गयीं और इस प्रकार थारूओं की वंशवृद्धि हुई । इस कथा की पुष्टि इनके समाज में अब भी स्त्रियों के आचरण से होती है । इनके समाज में स्त्रियों का स्थान पुरूषों से ऊंचा माना जाता है । नव-विवाहिता को रानी कहकर सम्बोधित किया जाता है । स्त्रियां अपनी कमाई की स्वतन्त्र स्वामिनी होती हैं तथा उसको मन चाहे खर्च करती हैं । पुरूषों को अपने चौके में प्रवेश नहीं करने देतीं एवं उन्हें बाहर ही बैठाकर भोजन कराती हैं। थारू अपने को राजपूतों का वंशज मानते हैं।

जीवन यापन एवं सामाजिक परिवेश-

इस वनाच्छादित क्षेत्र में विभिन्न जंगली जानवरों की बहुलता थी, अतएव प्रारम्भ में थारू इन्हीं जानवरों क शिकार तथा कन्द-मूल फल के संग्रह द्वारा जीवन-यापन करते रहे होंगे । युद्ध में प्रवीण इन राजपूत भृत्यों एवं सैनिकों के लिए इस शिकारी व्यवस्था को अपनाने में कोई कठिनाई नहीं थी। अब भी थारू शिकार में दक्ष हैं एवं अचूक निशाना लगाते हैं । क्रमशः प्रचुर जल एवं जंगल काटकर बनाये गये खेतों में सहज उर्वर जलोढ़ मिट्टी की उपलब्धता से आकर्षित होकर उन्होने चावल की कृषि भी प्रारम्भ की। इस कृषि में इन्हें बिना अधिक परिश्रम किये अच्छी फसल प्राप्त होने लगी । फलस्वरूप ये स्थायी कृषक हो गए । खेती के अतिरिक्त जंगली जानवरों का शिकार तथा वन वस्तुओं का संग्रह कार्य भी करते हैं और पशु भी पालते हैं। खेती में हल चलाने के लिए बैल का उपयोग करते हैं। गाय भैंस से दूध प्राप्त करते हैं तथा मुर्गी, बकरा आदि मांस के लिए पालते हैं । इस प्रकार इनके भोजन में चावल के अतिरिक्त मांस तथा दूध आदि का विशेष महत्व है। ये महुआ अथवा चावल की शराब भी बनाते हैं और मद्यपान से इन्हें कोई परहेज नहीं है। स्त्रियां भी पुरूषों की तरह ही खेतों में भी काम करती हैं । वे जंगलों से फल-फूल, जड़ी-बूटियां आदि एकत्र करके बाजार में बेंच लेती हैं। मछलियां भी इस क्षेत्र में बहुतायत मिल जाती हैं। स्त्री-पुरूष दोनों धनोपार्जन करते हैं तथा अपना पैसा बिना एक-दूसरे से परामर्श किये खर्च करते हैं। चावल, जानवरों की खाल, हड्डियां तथा वन से संग्रहीत अन्य वस्तुओं का बाजार में विक्रय कर ये अपनी अन्य दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं प्राप्त करते हैं। वस्त्रादि में

इनमें तथा संलग्न मैदानी क्षेत्रों के लोगों में कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं है। थारू के घर साधारणतया मिट्टी, बांस तथा लकड़ी के बने होते हैं। इनकी छाजन, फूस अथवा खपरैल की होती है। घर के अन्दर बड़ी सफाई होती है। अपने मिट्टी अथवा धातु के बर्तनों को वे किसी को छूने नहीं देते। इस प्रकार उनके जीवन यापन का ढंग पर्याप्त परिष्कृत है। आर्थिक कार्य-कलाप में मैदानी भाग के अन्य लोगों से भेद कर पाना कठिन है। जो भी अन्तर मिलता है वह इनके एकांतिक जीवन तथा भौगोलिक परिवेश के कारण है।

थारू जाति दो विशेष वर्णों में बटी है उच्च वर्ण और निम्न वर्ण। उच्च वर्ण में बांधा, बिरतिया, बदवैत, दाहैत, महतम, रावत सम्मिलित किये जाते है, जबकि निम्न वर्ण में बक्सा, खुका, राजियाँ सांसा, जागिया और दांगरा लोग है। ये लोग अपने ही वर्ग में विवाह कर सकते हैं। इनके गोत्र किसी पूर्वज या किसी सन्त पुरुष के नाम से चलते हैं। गोत्र में विवाह करना निषेध माना गया हैं।

ग्राम्य समुदाय का प्रशासन एक मुखिया द्वारा होता है, जिसे प्रधान कहते है। इसका कार्य गाँव का प्रशासन, सामाजिक एवं धार्मिक क्रियांए सम्पन्न कराना, ग्रामीणों से लगान वसूल करना तथा दैवीय और अन्य आपदाओं की सूचनांए देना, आदि हैं। इनका चुनाव न होकर वंश दर वंश होता हैं। प्रधान के स्थान पर काम करने के लिए सरवाकर अन्य छोटे कार्यों को सम्पादित करने के लिए चपरासी या कोतवार तथा सामाजिक और धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करने के लिए भरारा होता हैं।

विवाह के लिए प्रस्ताव लड़के के पक्ष से होता है। विवाह तय करते समय सम्बन्धित लड़के-लड़की की सहमति आवश्यक है। विवाह संस्कार चार चरणों में सम्पन्न होता है। प्रथम चरण में जिसे अपना-पराया कहते हैं, विवाह तय होता है। लड़की के घर लड़के का अभिभावक विवाह प्रस्ताव लेकर जाता है, तथा विवाह तय हो जाने पर नाच-गान के साथ समारोह मानते हैं। उसी समय लड़की की मां लड़के के पिता के पैर छूकर लड़की के वस्त्राभूषण के लिए पैसे की मांग करती है। इसके पश्चात

बटकाही अर्थात विवाह की तिथि तय होती है । तत्पश्चात निश्चित तिथि की, जो विशेषतया जनवरी-फरवरी में शनि या मंगल दिनों का होता है 'भांवर' अर्थात विवाह संस्कार सम्पन्न होता है । भांवर के बाद बधू एक दिन के लिए पति के घर जाकर वापस आ जाती है । अन्तिम चरण चाल कहलाता है । भांवर से वापस आने के तीन महीने बाद पत्नी अपने पति के घर सदा के लिए आ जाती है । थारूओं में विवाह पूर्व यौन स्वच्छन्दता है । पत्नी के विनिमय तथा तलाक का भी प्रचलन है । ऐसा सम्भवतः विभिन्न सामाजिक स्तरों के पलायित स्त्री-पुरूषों के एकान्तवासजन्य परिस्थिति के कारण हुआ । धार्मिक स्तर पर थारू हिन्दुओं के अधिक निकट हैं । ये अपने को सूर्यवंशी राजपूतों के बंशज मानते हैं, तथा राम और सीता का आदरपूर्वक उल्लेख करते हैं ।

थारू जनजाति के लोगो में पहले की अपेक्षा ज्यादा शिक्षा के क्षेत्र में रुचि जागृत हुई है । खासकर पिछले दशक में केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा प्रारम्भ की गयी साक्षरता अभियान, आंगनबाड़ी केन्द्र मिड डे मील, प्रौढ़ एवं सतत् शिक्षा प्रसार, सरस्वती शिशु मन्दिर आदि ने बच्चों और महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में केवल जागरुक ही नहीं किया है वरन् शिक्षित करके एक बड़ा वर्ग इनमे तैयार किया है ।

जनजातीय समाज अन्य समाज से जुड़ने लगा है । इसी जुड़ाव एवं लगाव ने जनजातियों को आधुनिक धारा में लाने में सहयोग दिया है । थारू जनजाति पर भी आधुनिकीकरण का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है । यह प्रभाव इनके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में देखने को मिलता है । भौतिक विकास एवं आधुनिकीकरण से थारू जनजाति का सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक क्षेत्रों पर तो प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा ही है, साथ ही साथ परोक्ष प्रभाव राजनैतिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी विधमान हो गया है ।

संदर्भ-

1. Husnew, Nadim (1990) : 'Tribal India-Today' Jawahar Publishing and Dirtributors New Delhi
2. Shukla, Rohit and Kulkarni, K.M. (1990) : "Forest and tribal Life" Ashok Kumar Mittal concept, Publishing concept New

3. सिंह, राम प्रवेश (1996) : "मानव उदभव तथा प्रजातिय अध्ययन" बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना-3

4. जगदीश सिंह (2011) : "मानव भूगोल" ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर।